4. भारतीय संस्कृति (डॉ.राजेंद्र प्रसाद)

अभ्यास

(क) लघु उत्तरीय प्रश्न

1. डॉ. राजेंद्र प्रसाद का जन्म कब और कहाँ हुआ था?

उ०– डॉ. राजेंद्र प्रसाद का जन्म 3 दिसंबर, 1884 को बिहार के जीरादेई नामक एक छोटे से ग्राम में हुआ था।

2. डॉ. राजेंद्र प्रसाद के पिता का क्या नाम था?

उ०– डॉ. राजेंद्र प्रसाद के पिता का नाम महादेव सहाय था।

3. डॉ. राजेंद्र प्रसाद साहित्य के अतिरिक्त और अन्य किस क्षेत्र में भी कुशल माने जाते हैं?

उ०– डॉ. राजेंद्र प्रसाद साहित्य के अतिरिक्त राजनीति के क्षेत्र में भी कुशल माने जाते हैं।

4. डॉ. राजेंद्र प्रसाद की शिक्षा-दीक्षा बताइए।

उ०– डॉ. राजेंद्र प्रसाद की प्रारंभिक शिक्षा इनके गाँव में हुई। इसके पश्चात 'कलकत्ता-विश्वविद्यालय' से 'एम.ए.'की परीक्षा उत्तीर्ण की। इन्होंने वकालत की पढ़ाई के लिए कलकत्ता प्रेसिडेंसी कॉलेज में प्रवेश ले लिया और सन् 1915 में कानून में मास्टर डिग्री में विशिष्टता पाने के लिए स्वर्ण पदक प्राप्त किया। इसके बाद इन्होंने कानून में डॉक्टरेट की उपाधि भी प्राप्त की।

5. डॉ. राजेंद्र प्रसाद ने वकालत कब और कहाँ से आरंभ की तथा उन्होंने वकालत कब और क्यों छोड़ दी?

उ०– डॉ. राजेंद्र प्रसाद ने सन् 1911 ई. में कलकत्ता से वकालत आरंभ की तथा सन् 1920 में गाँधी जी के आदर्शों, सिद्धांतों और आजादी के आंदोलन से प्रभावित होकर वकालत छोड़ दी।

6. डॉ. राजेंद्र प्रसाद को 'भारत रत्न' से कब सम्मानित किया गया?

उ०– डॉ. राजेंद्र प्रसाद को सन् 1962 ई. में 'भारत रत्न' से सम्मानित किया गया।

7. डॉ. राजेंद्र प्रसाद भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के पुनः अध्यक्ष किनके त्यागपत्र देने के बाद चुने गए?

उ०– डॉ. राजेंद्र प्रसाद नेताजी सुभाषचंद्र बोस के त्यागपत्र देने के बाद पुन: भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अध्यक्ष चुने गए।

8. डॉ. राजेंद्र प्रसाद भारत के राष्ट्रपति कब चुने गए?

उ०– डॉ. राजेंद्र प्रसाद 26 जनवरी, 1950 में भारत के राष्ट्रपति चुने गए।

9. डॉ. राजेंद्र प्रसाद की प्रमुख कृतियाँ कौन-कौन सी हैं?

उ०– डॉ. राजेंद्र प्रसाद की प्रमुख कृतियाँ हैं— आत्मकथा, बापू के कदमों में, इंडिया डिवाइडेड, सत्याग्रह ऐट चंपारण, गाँधी जी की देन, भारतीय संस्कृति व खादी का अर्थशास्त्र, मेरी यूरोप यात्रा, शिक्षा और संस्कृति आदि।

10. डॉ. राजेंद्र प्रसाद किस प्रकार की भाषा के पक्षधर थे?

उ०– डॉ. राजेंद्र प्रसाद हिंदी के सरल व सुबोध भाषा के पक्षधर थे। इनकी भाषा व्यावहारिक है तथा इन्होंने अपनी भाषा में ग्रामीण कहावतों व ग्रामीण शब्दों का प्रयोग किया है।

11. डॉ. राजेंद्र प्रसाद अपनी रचनाओं में किस प्रकार की शैली का प्रयोग करते थे?

उ०– डॉ. राजेंद्र प्रसाद अपनी रचनाओं में विवेचनात्मक, भावात्मक, आत्मकथात्मक तथा साहित्यिक एवं भाषण शैली का प्रयोग करते थे।

12. डॉ. राजेंद्र प्रसाद का निधन कब और कहाँ हुआ था?

उ०– डॉ. राजेंद्र प्रसाद का निधन 28 फरवरी सन् 1963 ई. में पटना के निकट सदाकत आश्रम में हुआ था।

(ख) विस्तृत उत्तरीय प्रश्न

1. डॉ. राजेंद्र प्रसाद का जीवन परिचय देते हुए इनके साहित्यिक परिचय पर भी प्रकाश डालिए।

उ०– डॉ. राजेंद्र प्रसाद एक सफल साहित्यकार, राजनीतिज्ञ एवं महान देशभक्त थे। भारत के स्वाधीनता आंदोलन में इन्होंने महत्वपूर्ण योगदान दिया। राजनीति के साथ-साथ साहित्य के क्षेत्र में भी इनका योगदान सदैव वंदनीय रहेगा। ये एक श्रेष्ठ विचारक व लेखक होने के साथ-साथ महान नेता भी थे। अपने लेखों एवं भाषणों के माध्यम से इन्होंने देश को गौरवान्वित किया। सामाजिक, शैक्षिक, सांस्कृतिक आदि विभिन्न विषयों पर इनके द्वारा लिखे गए लेख हिंदी साहित्य की अमूल्य निधि हैं। देश में अत्यंत लोकप्रिय होने के कारण इन्हें राजेंद्र बाबू अथवा देशरत्न कहकर पुकारा जाता था। डॉ. राजेंद्र प्रसाद हमारे प्रथम राष्ट्रपति भी थे।

जीवन परिचय व कार्यक्षेत्र– डॉ. राजेंद्र प्रसाद का जन्म 3 दिसंबर, 1884 को बिहार के जीरादेई नामक एक छोटे से ग्राम में हुआ था। इनके पिता का नाम महादेव सहाय था। इनकी प्रारंभिक शिक्षा इनके गाँव में हुई तथा प्रारंभ में इन्होंने फारसी भाषा का ज्ञान प्राप्त किया। उस समय बाल विवाह जैसी कुरीतियाँ हमारे देश में व्याप्त होने के कारण मात्र 12 वर्ष की आयु में इनका विवाह राजवंशी देवी के साथ संपन्न हुआ। इसके पश्चात इन्होंने 'कलकत्ता-विश्वविद्यालय' से 'एम.ए.' की परीक्षा 'प्रथम श्रेणी' में उत्तीर्ण की। एम.ए. की परीक्षा उत्तीर्ण करने के पश्चात् इन्होंने वकालत की पढ़ाई के लिए कलकत्ता प्रेसिडेंसी कॉलेज में प्रवेश ले लिया और सन् 1915 में कानून में मास्टर डिग्री में विशिष्टता पाने के लिए राजेंद्र प्रसाद को स्वर्ण पदक मिला। इसके बाद इन्होंने कानून में डॉक्टरेट की उपाधि भी प्राप्त की। इन्होंने कुछ समय कलकत्ता (कोलकाता) और पटना उच्च न्यायालय में वकालत का कार्य किया। गाँधी जी के आदर्शों, सिद्धांतों और आजादी के आंदोलन से प्रभावित होकर सन् 1920 ई. में इन्होंने वकालत का कार्य छोड़ दिया तथा पूर्ण रूप से देशसेवा में लग गए। सन् 1934 ई. में वे भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के मुंबई अधिवेशन में अध्यक्ष चुने गए। नेताजी सुभाषचंद्र बोस के अध्यक्ष पद से त्याग पत्र देने पर कांग्रेस अध्यक्ष का पदभार इन्होंने एक बार पुन: 1939 में सँभाला था। 15 अगस्त 1947 में देश के स्वतंत्र होने के बाद उन्होंने देश के पहले राष्ट्रपति का पदभार ग्रहण किया।

भारतीय संविधान के लागू होने से एक दिन पहले 25 जनवरी, 1950 को इनकी बहन भगवती देवी का निधन हो गया, किंतु ये भारतीय गणराज्य के स्थापना की प्रक्रिया के बाद ही उनके दाह-संस्कार के लिए गए। 12 वर्षों तक राष्ट्रपति के

रूप में कार्य करने के पश्चात उन्होंने 1962 में अपने अवकाश की घोषणा की। इन्हें भारत सरकार द्वारा सर्वोच्च नागरिक सम्मान 'भारत रत्न' से सम्मानित किया गया।

डॉ. राजेंद्र प्रसाद आजीवन हिंदी साहित्य-सृजन तथा देशसेवा में संलग्न रहे। इन्होंने अपना अंतिम समय पटना के निकट सदाकत आश्रम में व्यतीत किया तथा यहीं पर 28 फरवरी सन् 1963 ई. में उनकी मृत्यु हो गई।

साहित्यिक परिचय– डॉ. राजेंद्र प्रसाद ने शिक्षा एवं संस्कृति, भारतीय शिक्षा, राजनीति आदि विषयों को आधार मानकर साहित्य-सृजन किया। इनकी कृतियाँ निम्नलिखित हैं—

आत्मकथा, बापू के कदमों में, इंडिया डिवाइडेड,सत्याग्रह ऐट चंपारण, गाँधी जी की देन, भारतीय संस्कृति व खादी का अर्थशास्त्र, मेरी यूरोप यात्रा, शिक्षा और संस्कृति।

डॉ. राजेंद्र प्रसाद ने अपनी रचनाओं के माध्यम से भारतीय संस्कृति में अनेकता में एकता के दर्शन कराए हैं। इन्होंने अपनी रचनाओं द्वारा हिंदी साहित्य की पर्याप्त सेवा की है। डॉ.राजेंद्र प्रसाद 'सादा जीवन और उच्च विचार' में विश्वास रखते थे, इसका परिचय इनकी रचनाओं से स्पष्ट होता है। ये हिंदी के एक महान साधक तथा एक महान देशभक्त के रूप में हमेशा भारतवासियों के हृदय में निवास करते रहेंगे। इनकी साहित्यिक सेवाओं के कारण हिंदी साहित्य इनका सदैव ऋणी रहेगा।

2. डॉ.राजेंद्र प्रसाद की भाषागत विशेषताओं को स्पष्ट कीजिए।

उ०– **भाषागत विशेषताएँ–** डॉ. राजेंद्र प्रसाद ने अपनी रचनाओं में सरल व सुबोध भाषा का प्रयोग किया है। इन्होंने बिहारी, उर्दू, संस्कृत व अंग्रेजी के शब्दों का भी पर्याप्त मात्रा में प्रयोग किया है। इनकी भाषा व्यावहारिक है तथा इन्होंने आवश्यकतानुसार ग्रामीण कहावतों और ग्रामीण शब्दों का भी प्रयोग किया है। इन्होंने अपनी शैली के रूप में विवेचनात्मक, भावात्मक, आत्मकथात्मक तथा साहित्यिक एवं भाषण शैली का प्रयोग किया है। इनकी आत्मकथात्मक शैली पर आधारित 'मेरी आत्मकथा' पर इन्हें 'मंगलाप्रसाद' पारितोषिक से सम्मानित किया गया।

3. 'भारतीय संस्कृति' पाठ का सारांश अपने शब्दों में लिखिए।

उ०– 'भारतीय संस्कृति' डॉ. राजेंद्र प्रसाद के एक भाषण का अंश है। इसमें उन्होंने बताया है कि भारत जैसे विशाल देश में जीवन व रहन-सहन की विविधता में भी एकता के दर्शन होते हैं। विभिन्न भाषा, जाति व धर्म की मणियों को एक सूत्र में पिरोकर रखने वाली हमारी भारतीय संस्कृति विशिष्ट है।

डॉ. राजेंद्र प्रसाद जी कहते हैं कि यदि कोई विदेशी व्यक्ति जो भारत की विभिन्नता से पूरी तरह से अनभिज्ञ हो, अगर वह भारत के एक छोर से दूसरे छोर तक यात्रा करें तो वह इस देश की विभिन्नताओं को देखकर कहेगा कि यह एक देश नहीं है, बल्कि कई देशों का एक समूह है जो बहुत-सी बातों में एक-दूसरे से बिलकुल अलग है। यहाँ प्राकृतिक विभिन्नताएँ भी एक महाद्वीप के समान नजर आती हैं। यहाँ एक ओर उत्तर में बर्फ से ढ़की हुई हिमालय की चोटियाँ हैं तो दूसरी तरफ दक्षिण में बढ़ने पर समतल मैदान व फिर विंध्य, अरावली, सतपुड़ा आदि की पहाड़ियाँ। पश्चिम से पूर्व में भी विभिन्न विषमताएँ हैं। भारत में एक तरफ हिमालय में कठोर सर्दी वहीं दूसरी ओर समतल मैदानों में जलती हुई लू (गर्म हवाएँ) और कन्याकुमारी का सुहावना मौसम भी है। यहाँ अगर असम में वर्षा तीन सौ इंच है तो जैसलमेर में दो से चार इंच है। भारत में सभी तरह के अन्न का उत्पादन होता है। यहाँ सब प्रकार के फल, सभी प्रकार के खनिज, वृक्ष, जानवर आदि पाए जाते हैं। यहाँ पर रहन-सहन, खान-पान का अंतर वहाँ के लोगों की शारीरिक बनावट में भी देखने को मिलता है। इसी प्रकार यहाँ भिन्न-भिन्न भाषाएँ व बोलियाँ प्रचलित हैं। भारत में प्राय: सभी धर्मों के लोग पाए जाते हैं। अगर भारत की विभिन्नता को देखकर कोई अपरिचित इसे देशों का समूह या जातियों का समूह कहे, तो इसमें कोई अचंभा करने वाली बात नहीं है। परंतु सूक्ष्मता से विचार करने पर इन विभिन्नताओं में भी एकता नजर आती है, जैसे विभिन्न फूलों को पिरोकर सुंदर हार तैयार किया गया हो। भारतीय संस्कृति में व्याप्त विभिन्नताएँ भी ऐसे फूलों व मणियों के समान ही हैं। भारत की बहुरंगी संस्कृति की अनेकता में व्याप्त एकता किसी कवि की कल्पना मात्र नहीं है, बल्कि एक ऐतिहासिक सत्य है, जो हजारों वर्षो से विद्यमान है। भारतीय संस्कृति के विशाल सागर में गिरने वाली जाति, धर्म, भाषारूपी आदि नदियों में एक ही रूप से वही जल बहता है, जो भारत देश के अस्तित्व को कायम रखने में कामयाब हुआ है। डॉ. प्रसाद कहते हैं कि भारत में नीति व अध्यात्म ऐसा स्रोत है जो संपूर्ण भारत में प्रत्यक्ष व परोक्ष रूप में बहता रहता है। हमारे देश में उच्च चरित्र वाले तथा आत्मिक चेतना से संपन्न महापुरुषों का जन्म होता रहा है जिनके सत्य और अहिंसा के सिद्धांत मानवता के लिए आवश्यक हैं। भारत में स्थापित प्रजातंत्र से मानव को अपना पूरा विकास करने की स्वतंत्रता प्राप्त हुई है और सामूहिक व सामाजिक एकता के विकास का मार्ग भी अग्रसर हुआ है। भारतीय संस्कृति का मूल आधार अहिंसा है और अहिंसा का दूसरा रूप त्याग है। हिंसा का दूसरा रूप स्वार्थ है जो भोग के रूप में हमारे सामने आता है। परंतु हमारी सभ्यता के अनुसार

भोग की उत्पत्ति त्याग से हुई है व त्याग भोग में ही पाया जाता है। त्याग की भावना का मन में उद्भव होने पर मन में अपार सुख व शांति का अनुभव होता है। भारत में विभिन्न धर्मों और संप्रदायों को विकास करने की पूर्ण स्वतंत्रता है। भारत ने विभिन्न देशों की संस्कृति को अपने में मिलाया व स्वयं भी उनमें मिश्रित हो गया और देश व विदेशों में एकता, प्रेम व भाईचारे के साथ स्थापित की। भारत ने दूसरों पर कभी अत्याचार नहीं किया बल्कि उनके हृदयों को जीतकर अपना प्रभुत्व कायम किया।

वैज्ञानिक व औद्योगिक विकास के भयंकर परिणामों के प्रति हमें सचेत रहना चाहिए व विपत्तियों के आने पर घबराना नहीं चाहिए। पहले भी प्रकृति द्वारा या मानव द्वारा किए गए अत्याचारों से हम विचलित नहीं हुए। यहाँ साम्राज्य बने और समाप्त हुए' संप्रदायों का उत्थान व पतन हुआ परंतु हमारी संस्कृति निरंतर बनी रही। अपने बुरे दिनों में भी हमारे यहाँ बहुत से विद्वान हुए। अंग्रेजों द्वारा परतंत्र होने पर भी यहाँ गाँधी, रवींद्र, अरविंद, रमन जैसे लोगों का जन्म हुआ, जो सारे संसार के लिए आदर्श न बन गए।

हमारे देश के प्राण व जीवन रेखा देश में व्याप्त सामूहिक चेतना है, जो नगर और ग्राम, प्रदेश और संप्रदाय, वर्ग व जातियों को एक सूत्र में बाँधती है। अब हमें अपने देश भारत में उन अन्यायों व अत्याचारों को नहीं दोहराना है जो समाज में संघर्ष को जन्म देते हैं। हमें अपनी ऐतिहासिक, नैतिक, सांस्कृतिक चेतना के आधार पर अपनी आर्थिक व्यवस्था को मजबूत करना है। हमारे अंदर स्वयं के कल्याण की भावना न होकर जन कल्याण की भावना होनी चाहिए।

आज विज्ञान के विकास के फलस्वरूप व्यक्ति के हाथ में अतुलनीय और अद्भुत शक्ति है, जिसका उपयोग व्यक्ति व समूह के उत्थान व पतन के लिए होता रहता है। इसलिए हमें जन कल्याण की भावना को जाग्रत करना ही होगा। वर्तमान में भारत की प्रत्येक प्रादेशिक भाषा की सुंदर कृतियों के स्वाद को संपूर्ण भारत को चखाने के लिए उसका देवनागरी हिंदी में प्रकाशन साहित्यिक संस्थानों को करवाना चाहिए। दूसरी तरफ एक ऐसी संस्था की स्थापना की आवश्यकता है जो इन सभी भाषाओं के आदान-प्रदान को अनुवाद के माध्यम से कर सके। साहित्य संस्कृति का एक रूप है। इसके अतिरिक्त गान, नृत्य, चित्रकला व मूर्तिकला इसके दूसरे रूप हैं। भारत इन सब कलाओं में एकरूपता के द्वारा अपनी एकता को प्रदर्शित करता रहा है। भारत के विषय में शाहजहाँ ने भी एक भवन पर गुदवाया है ''यदि पृथ्वी पर कहीं स्वर्ग है तो यहाँ ही है, यहाँ ही है, यहाँ ही है।'

यह स्वप्न तभी सत्य होगा तथा पृथ्वी पर स्वर्ग तभी स्थापित होगा जब भूमंडल के सारे मानव अहिंसा, सत्य, सेवा को अपना आदर्श मानने लगेंगे।

(ग) अवतरणों पर आधारित प्रश्न

1. कोई विदेशी, जो .... देखने को मिलेगी।

संदर्भ– प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक 'हिंदी' के 'गद्य खंड' के डा. राजेंद्र प्रसाद द्वारा लिखित 'भारतीय संस्कृति' नामक निबंध से उद्धृत है।

प्रसंग– यहाँ लेखक डॉ. राजेंद्र प्रसाद ने भारत की विभिन्नता का बहुत सुंदर वर्णन किया है कि भारत में एक स्थान से दूसरे स्थान पर विभिन्नता को आसानी से देखा जा सकता है।

व्याख्या– डॉ. राजेंद्र प्रसाद ने भारत की विभिन्नता को यहाँ की सुंदरता बताते हुए कहा है कि कोई भी व्यक्ति जो विदेश से आता है, और जो भारत की विभिन्नताओं के बारे में कुछ भी नहीं जानता है, अगर वह भारत में एक छोर से दूसरे छोर तक यात्रा करे तो उसको यहाँ इतनी विभिन्नताएँ देखने को मिलेंगी, वह भारत को एक देश नहीं बल्कि देशों का समूह (महाद्वीप) कहेगा, जैसे एक देश दूसरे देश से भिन्न होता है उसी प्रकार यहाँ पर एक स्थान व दूसरे स्थान में विभिन्नता आसानी से देखने को मिल जाती है। यहाँ पर प्राकृतिक रूप से पाई जाने वाली विभिन्नताएँ इतनी ज्यादा मात्रा में व उतने ही प्रकार की बहुत गहरी मिलती हैं, जो किसी महाद्वीप के अंदर ही हो सकती हैं। यहाँ उत्तर में हिमालय की बर्फ से ढ़की चोटियाँ स्थित हैं तो दक्षिण की ओर जाने पर, गंगा, यमुना, ब्रह्मपुत्र नदियों द्वारा सिंचित समतल और आगे बढ़ने पर विंध्य, अरावली, सतपुड़ा, सह्याद्रि, नीलगिरी की पहाड़ियों में स्थित रंग-बिरंगे समतल देखने को मिलते हैं। भारत में पश्चिम दिशा से पूर्व दिशा तक जाने में भी इसी प्रकार की बहुत सारी विभिन्नताएँ देखने को मिलती हैं।

प्रश्नोत्तर

(अ) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।

उ० – पाठ– भारतीय संस्कृति **लेखक–** डॉ. राजेंद्र प्रसाद

(ब) कोई अपरिचित विदेशी अगर भारत की यात्रा करे तो वह क्या कह उठेगा?

उ० – कोई अपरिचित विदेशी अगर भारत की यात्रा करे तो वह भारत को देशों का समूह (महाद्वीप) कह उठेगा।

(स) गद्यांश में किन-किन नदियों व पर्वत शिखरों के विषय में बताया गया है?

उ० – गद्यांश में गंगा, यमुना, ब्रह्मपुत्र नदियों व विंध्य, आरावली, सतपुड़ा, सह्याद्रि, नीलगिरी के पर्वत शिखरों के विषय में बताया गया है।

2. असम की पहाड़ियों .... के लोग देते हैं।

संदर्भ– पूर्ववत्

प्रसंग– यहाँ लेखक ने भारत की प्राकृतिक विभिन्नता का वर्णन करते हुए विषमताओं को बताया है।

व्याख्या– हमारे देश भारत में इतनी प्राकृतिक विविधताएँ देखने को मिलती है; जिनका किसी अन्य देश में मिलना दुर्लभ है। हाँ, इतनी विविधताएँ किसी महाद्वीप में तो हो सकती हैं। इस दृष्टि से यदि कोई भारत को विभिन्न देशों का समूह कहे तो अतिशयोक्ति न होगी। यहाँ अगर असम की पहाड़ियों में 300 इंच तक की वर्षा वाले क्षेत्र उपस्थित हैं तो राजस्थान के जैसलमेर में दो-चार इंच वर्षा वाले क्षेत्र भी हैं। असम की जलवायु जहाँ अत्यधिक आर्द्रता से युक्त है, वहीं जैसलमेर की जलवायु अत्यधिक गर्म है। लगता है कि जैसे भूमि न होकर आग से तपता हुआ तवा हो। विश्व में पाया जाने वाला कोई अन्न अथवा फल ऐसा नहीं है, जो यहाँ पैदा नहीं होता अथवा जिसे पैदा न किया जा सके; क्योंकि यहाँ विश्व में पाई जाने वाली सभी प्रकार की जलवायु मिलती हैं और मिट्टियाँ भी लगभग सभी प्रकार की पाई जाती हैं। थोड़ी-बहुत मात्रा में विश्व में पाए जाने वाले सभी खनिज यहाँ की मिट्टी में पाए जाते हैं, विश्व का कोई ऐसा जानवर अथवा वृक्ष ऐसा नहीं, जो यहाँ के वनों में प्राप्त नहीं होता है। भारत की प्राकृतिक विविधता का यहाँ के लोगों के रहन-सहन, वेशभूषा, खान-पान, शरीर और मस्तिष्क पर भी खूब प्रभाव पड़ा है। यह वैज्ञानिक सिद्धांत भी है कि किसी स्थान की जलवायु व्यक्ति के रहन-सहन, वेषभूषा, खान-पान और शारीरिक विकास आदि को प्रभावित करती है। विज्ञान के इस सिद्धांत का जीता-जागता प्रमाण अर्थात् व्यावहारिक रूप यहाँ के विभिन्न राज्यों के लोगों में प्रत्यक्ष रूप से देखने को मिलता है। आशय यही है कि भारत के विभिन्न राज्यों के लोगों की वेशभूषा, रहन-सहन, खान-पान तथा शारीरिक संरचना में जो विविधता देखने को मिलती है, उसका सबसे प्रमुख कारक यहाँ की प्राकृतिक विविधता अथवा जलवायु ही है।

प्रश्नोत्तर

(अ) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।

उ०– पाठ– भारतीय संस्कृति **लेखक–** डॉ. राजेंद्र प्रसाद

(ब) गद्यांश के अनुसार भारत में सबसे अधिक व सबसे कम वर्षा कहाँ होती है?

उ०– गद्यांश के अनुसार भारत में सबसे अधिक वर्षा असम में तथा सबसे कम जैसलमेर में होती है।

(स) भारत की भूमि की विशेषता बताइए।

उ०– भारत भूमि की यह विशेषता है कि यहाँ संसार में पाया जाने वाला प्रत्येक फल, अन्न, खनिज पदार्थ, वृक्ष और जानवर मिलता है।

(द) मानव-जीवन पर प्राकृतिक विविधता का क्या प्रभाव पड़ता है?

उ०– प्राकृतिक विविधता मानव के रहन-सहन, खान-पान, वेश-भूषा, शरीर और मस्तिष्क को प्रभावित करती है। यही कारण है कि प्राकृतिक विविधताओं से परिपूर्ण भारत के विभिन्न प्रांतों के लोगों के रहन-सहन, खान-पान, वेशभूषा और रंग-रूप में विविधता देखने को मिलती है।

3. पर विचार .... एक ही हो जाए।

संदर्भ– पूर्ववत्

प्रसंग– यहाँ लेखक ने भारत की विभिन्नता में एकता के बारे में बताते हुए इस एकता को भारत की शक्ति बताया है।

व्याख्या– बाहर से देखने पर भारतीय संस्कृति में भाषा, जाति, धर्म आदि के रूप में भिन्नता के दर्शन होते हैं। हमारे देश में अनेक भाषा-भाषी, अनेक जातियाँ तथा अनेक धर्मों को मानने वाले लोग रहते हैं, फिर भी उनमें विचारों की एकता है और वे एक ही देश के नागरिक हैं; अत: उनकी संस्कृति भी एक है और वह है, 'भारतीय संस्कृति'। इसकी अनेकता में एकता उसी प्रकार विद्यमान है, जिस प्रकार एक रेशमी धागा विभिन्न प्रकार के पुष्पों अथवा मणियों को एक साथ गूँथ देता है और पुष्पों अथवा मणियों से मिलकर एक सुंदर माला बन जाती है। हमारी विभिन्नताएँ भी तरह-तरह की मणियों या पुष्पों के समान ही हैं, जो एकतारूपी धागे में बँधकर एक सुंदर संस्कृति का निर्माण करती हैं।

मणियाँ अथवा पुष्प; दूसरों से तभी तक अलग-अलग दिखाई देते हैं, जब तक उन्हें एक धागे में पिरोया नहीं जाता है।

एकता के रेशमी धागे में पिरोई हुई इन मणियों में प्रत्येक मणि दूसरी मणि को सुशोभित करती है और उसकी शोभा से स्वयं भी शोभायमान होती है। माला में गुँथे हुए विभिन्न फूलों के साथ भी ऐसा ही होता है। भारतीय संस्कृति में व्याप्त विभिन्नताएँ भी ऐसी मणियों अथवा पुष्पों के समान हैं, जो एकतारूपी रेशमी धागे में गुँथी हुई हैं। इसी एकता के कारण भारतीय संस्कृति जैसी विशाल और आकर्षक माला का निर्माण हुआ है। इसकी भिन्नता में भी सुंदरता है। ये विभिन्नताएँ एक-दूसरे को और अधिक सुंदर बना रही हैं।

विशाल भारत की बहुरंगी संस्कृति की अनेकता में एकता व्याप्त है। यह किसी कवि की कल्पनामात्र नहीं है। लेखक ने किसी भावावेश में भी ऐसा नहीं लिखा है कि भारतीय संस्कृति के मूल में एकता विद्यमान है। यह कविता की उड़ान नहीं, वरन् एक ऐतिहासिक सत्य है। जैसे विभिन्न झरनों और नदियों के उद्गम-स्थल अलग-अलग होने पर भी उनका जल दूर-दूर से आकर सागर की गोद में समा जाता है और उनका संगम 'सागर' कहलाता है। उसी प्रकार भारत में अनेक विचारधाराओं के लोग रहते हैं और विभिन्न धर्मों तथा संप्रदायों के झरने हजारों वर्षों से भारत में आकर मिलते रहे हैं। इन सबके मिलने से एक विस्तृत और गहरे सागर का निर्माण हुआ है। इसी सागर को हम भारतीय संस्कृति कहते हैं।

जिस प्रकार विभिन्न नदियों के उद्गम स्थल और प्रवाह क्षेत्रों की भौगोलिक स्थिति अलग-अलग होती है और उन क्षेत्रों में अलग-अलग प्रकार के अन्न, फल-फूल आदि उत्पन्न होते हैं, उसी प्रकार विभिन्न विचारधाराओं ने देश में विभिन्न प्रकार के रहन-सहन, खान-पान, रीति-रिवाज, आचार-विचार आदि को जन्म दिया है। जिस प्रकार नदियों में प्रवाहित होने वाला जल शीतल, स्वच्छ और कल्याणकारी होता है; उसी प्रकार देश में व्याप्त इन विचारधाराओं में प्रेम, अहिंसा तथा लोक-कल्याणरूपी जल प्रवाहित होता रहता है। यह जल अपने निकलने के स्थान (उद्गम) पर भी एक समान होता है और मिलन-स्थल पर भी एक ही होता है। ठीक इसी प्रकार हमारी सभ्यता और संस्कृति में जो विभिन्नताएँ दिखाई देती हैं, वे सब बाहरी वस्तु हैं, आंतरिक रूप में सब में एक ही भाव बहता है। ऊपर से दिखाई देने वाली ये विभिन्नताएँ अंत में और आरंभ में एक ही हैं। हाँ, अगर भिन्नता है तो वह केवल बाहरी प्रभाव में ही है।

(अ) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।

उ०– **पाठ–** भारतीय संस्कृति **लेखक–** डॉ. राजेंद्र प्रसाद

(ब) भारतीय संस्कृति का नाम किसे दे सकते हैं?

उ०– भारत की अनेकता में जो एकता की भावना विद्यमान है, उसे भारतीय संस्कृति का नाम दे सकते हैं।

(स) गद्यांश में भारत की किन विशेषताओं के बारे में बताया गया है?

उ०– गद्यांश में भारत की भाषा, जाति, धर्म आदि में व्याप्त विभिन्नताओं की विशेषताओं के बारे में बताया गया है।

(द) भारत की अनेकता में एकता को किस उदाहरण द्वारा स्पष्ट किया गया है?

उ०– भारत की अनेकता में एकता को विभिन्न रंगों की सुंदर मणियों अथवा फूलों को रेशमी धागे में पिरोकर बनाए गए सुंदर हार के उदाहरण द्वारा स्पष्ट किया गया है।

4. आज हम इसी .... दौरे जमाँ हमारा।

संदर्भ– पूर्ववत्

प्रसंग– प्रस्तुत गद्यांश में लेखक ने भारतीय संस्कृति को एक विशाल सागर के समान बताया है। जिसमें अनेक जाति, धर्म, भाषा के लोग समाहित होते हैं।

व्याख्या– भारतीय संस्कृतिरूपी विशाल सागर में आकर गिरने वाली जाति, धर्म, भाषारूपी आदि नदियों में एक ही भाव से शुद्ध, स्वच्छ, शीतल तथा स्वास्थ्यप्रद भारतीयतारूपी एकता का जल अमृत के समान प्रवाहित होता रहा है। आज यह जल राजनैतिक स्वार्थ, सांप्रदायिकता, आतंकवाद, धार्मिक कट्टरता आदि के द्वारा मलिन हो गया है। हमें आज सदियों पहले प्रवाहित उसी अमृत तत्व की तलाश है, जिस अमृतरूपी जल में एक ही उदात्त भाव का समावेश रहा है, जो भारतीय संस्कृति को अमरता और स्थिरता प्रदान करता है। हमारी हार्दिक इच्छा है कि विभिन्न विचारधाराओं के रूप में इन नदियों में यह अमृतरूपी जल सदैव प्रवहमान् बना रहे, जिससे सभी लोगों में प्रेम और राष्ट्रीयता की भावना का संचार हो। इस भावना का विस्तृत रूप ही सनातम धर्म है और यही भारतीय संस्कृति की उदात्त परंपरा है। यद्यपि इस देश ने तरह-तरह के संकट झेले हैं, फिर भी भारतीय संस्कृति की विभिन्नता में एकता एक ऐसा तत्व है, जो आज तक मिटाया नहीं जा सका है। न जाने कितनी बार इस देश पर बाहरी लोगों द्वारा आक्रमण किए गए और अनगिनत बार यह देश आक्रमणकारियों की धर्मान्धता का शिकार हुआ, किन्तु यहाँ एक ऐसा तत्व सदैव विद्यमान रहा, जिसके कारण भारतीय संस्कृति का अस्तित्व आज तक बना हुआ है। वस्तुत: यह तत्व ही भारतीय संस्कृति का अमृत-तत्व है। हमारी यही कामना है कि भारतीय

संस्कृति को इस अमृत-तत्व की शक्ति सदैव प्राप्त होती रहे। इस शक्ति के द्वारा ही भारतीय संस्कृति भविष्य में भी जीवित और स्थायी बनी रहेगी।

प्रश्नोत्तर

(अ) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।

उ०– पाठ– भारतीय संस्कृति **लेखक–** डॉ. राजेंद्र प्रसाद

(ब) कवि इकबाल ने क्या कहा है? अपने शब्दों में स्पष्ट कीजिए।

उ०– कवि इकबाल ने कहा है कि ''न जाने कितनी बार इस देश पर बाहरी लोगों द्वारा आक्रमण किए गए और अनगिनत बार यह देश आक्रमणकारियों की धर्मान्धता का शिकार हुआ, किंतु यहाँ एक ऐसा तत्व विद्यमान है, जिसके कारण भारतीय संस्कृति का अस्तित्व आज तक विद्यमान है।

(स) उपर्युक्त गद्यांश में अमर-तत्व का क्या अर्थ है?

उ०– उपर्युक्त गद्यांश में अमर-तत्व से तात्पर्य भारतीय संस्कृति की अनेकता में एकता से है।

5. यह एक नैतिक .... पथ अहिंसा के हों।

संदर्भ– पूर्ववत्

प्रसंग– यहाँ लेखक ने हमारे देश की संस्कृति में निहित अमृत-तत्व के स्रोत को नैतिक और आध्यात्मिक बताया है व प्रजातंत्र में मनुष्य के विकास की बात कही है।

व्याख्या– डॉ. राजेंद्र प्रसाद कहते हैं कि भारत की राष्ट्रीय एकता की प्राण-शक्ति इसकी नीति और इसके अध्यात्म में निहित है। वास्तविकता यह है कि भारतीय संस्कृति में पवित्र चरित्र तथा आत्मा संबंधी चिंतन का झरना सदा से ही अबाध गति से बहता रहा है। यह झरना कभी स्पष्ट दिखता हुआ और कभी परोक्ष रूप में बहता रहा है। हमारे सामने समय-समय पर उच्च चरित्र वाले तथा धार्मिक एवं आत्मिक चेतना से संपन्न महापुरुष आते रहे हैं। यह हमारा सौभाग्य ही कहा जाएगा कि आधुनिक युग में इस चरित्र और अध्यात्म की सजीव एवं साकार मूर्ति, महात्मा गाँधी के रूप में हमारा नेतृत्व कर रही थी। नैतिक एवं आध्यात्मिक चेतना के इस मूर्त रूप को अर्थात् महात्मा गाँधी को प्रत्यक्ष रूप से हमने चलते-फिरते तथा हँसते-रोते भी देखा है।

ये भारतीय संस्कृति के उसी सनातम अमृत-तत्व के प्रत्यक्ष मूर्त स्वरूप थे, जिसने इस संस्कृति को अमरता प्रदान कर रखी है। इस महान विभूति ने भारत को उसकी अमरता का फिर से स्मरण कराया। परिणाम यह हुआ कि निर्जीवता की सीमा तक शिथिल पड़े भारत में एक बार फिर से नवप्राणों का संचार हो उठा। ऐसा लगने लगा कि हमारे शरीर की सूखी हड्डियों में नवीन मज्जा भर गई और निराशा से मुरझाए हुए हमारे मन में आशा का संचार हो गया। जिस तत्व ने भारत को नवीन जीवन और स्फूर्ति प्रदान की, वह तत्व है-सत्य और अहिंसा। यह अमर तत्व मिटाने से मिटता नहीं है। समस्त मानव-जाति को इसकी आवश्यकता अनुभव हो रही है; क्योंकि सभी यह बात अच्छी प्रकार समझ गए हैं कि इस अमर तत्व से ही मानवता की रक्षा हो सकती है। लेखक कहते हैं कि अब भारत में प्रजातंत्र व्याप्त है अर्थात यहाँ पर जनता का ही शासन है जिसमें व्यक्ति को पूर्ण स्वतंत्रता मिलती है, जिससे वह अपना सर्वांगीण विकास करके सामूहिक व सामाजिक एकता को बढ़ाने का प्रयास करता है। कभी-कभी व्यक्ति व समाज के बीच विरोधाभास भी हो सकता है।

प्रत्येक व्यक्ति अपनी उन्नति और विकास का प्रयास करता है, यदि एक व्यक्ति के विकास के परिणामस्वरूप दूसरे व्यक्ति के विकास में अवरोध उत्पन्न होता है तो संघर्ष उत्पन्न हो जाता है, इसलिए यह हमारा नैतिक कर्तव्य है कि हम अपने कार्य को इस प्रकार संपन्न करें, जिससे किसी दूसरे की उन्नति में बाधा न उत्पन्न हो। इस संघर्ष को टालने का एकमात्र उपाय अहिंसा या त्याग-भावना का अनुसरण करना है।

प्रश्नोत्तर

(अ) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।

उ०– पाठ– भारतीय संस्कृति **लेखक–** डॉ. राजेंद्र प्रसाद

(ब) नैतिक और आध्यात्मिक स्रोत को स्पष्ट कीजिए।

उ०– नैतिक और आध्यात्मिक स्रोत राष्ट्रीय एकता की भावना ही है।

(स) संघर्ष कब पैदा होता है और यह कैसे दूर हो सकता है?

उ०– एक-दूसरे के स्वार्थ आपस में टकराने पर संघर्ष पैदा होता है, इसे दूर करने के लिए अहिंसा या त्याग-भावना का अनुसरण करना होगा।

(द) देश में किस प्रकार के प्रजातंत्र की स्थापना हो चुकी है?

उ०– देश में प्रजातंत्र की स्थापना हो चुकी है, जिसमें व्यक्ति को पूर्ण स्वतंत्रता दी गई है। जिससे वह अपना विकास कर सके और सामूहिक व सामाजिक एकता को भी बढ़ा सके।

6. हमारी सारी ....'तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा:।

संदर्भ– पूर्ववत्

प्रसंग– लेखक ने अहिंसा को भारतीय संस्कृति का मूल आधार बताया है और कहा है कि अहिंसा का ही दूसरा नाम या दूसरा रूप त्याग है।

व्याख्या– राजेंद्र प्रसाद जी कहते हैं कि हमारी भारतीय संस्कृति का मुख्य आधार अहिंसा तत्व ही है। इसलिए हमारे ग्रंथों में जहाँ कहीं भी नैतिक सिद्धांतों की बात कही गई है, वहाँ मन, वचन और कर्म से हिंसा न करने का उल्लेख अवश्य किया गया है। लेखक ने अहिंसा को त्याग का नाम दिया है। त्याग करना ही अहिंसा है और दूसरे रूप में अहिंसा ही त्याग है। अहिंसा और त्याग दोनों में कोई अंतर नहीं है। ठीक इसी तरह हिंसा का दूसरा नाम अथवा दूसरा रूप स्वार्थ है। हिंसा ही स्वार्थ है और स्वार्थ का पयार्य हिंसा है। दोनों में उतना ही गहरा संबंध है, जितना अहिंसा और त्याग में। एक मानव दूसरे मानव को स्वार्थ के वशीभूत होकर ही हानि पहुँचाता है। अत: स्वार्थ का दूसरा नाम हिंसा है और हिंसा अथवा स्वार्थ का अर्थ है–भोग। भारतीय दर्शन के अनुसार भोग की उत्पत्ति त्याग से हुई है और त्याग भी भोग में ही पाया जाता है। उनिषद् में कहा गया है कि संसार का भोग, त्याग की भावना से करो। यहाँ त्याग में ही भोग माना गया है।

प्रश्नोत्तर

(अ) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम बताइए।

उ०– **पाठ–** भारतीय संस्कृति **लेखक–** डॉ. राजेंद्र प्रसाद

(ब) हिंसा का दूसरा रूप क्या है?

उ०– स्वार्थ हिंसा का दूसरा रूप है।

(स) भारतीय संस्कृति का मूलाधार बताइए।

उ०– भारतीय संस्कृति का मूलाधार अहिंसा है।

(द) अहिंसा का दूसरा नाम बताइए।

उ०– त्याग अहिंसा का दूसरा नाम है।

(य) 'तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा:' का क्या अर्थ है?

उ०– 'तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा:' से तात्पर्य है कि त्याग की भावना से ही भोग करना चाहिए क्योंकि त्याग की भावना से ही सभी आपसी संघर्ष समाप्त हो जाते हैं।

7. वैज्ञानिक और औद्योगिक .... अधिक व्यापक है।

संदर्भ– पूर्ववत्

प्रसंग– प्रस्तुत गद्यांश में लेखक ने बताया है कि किस प्रकार प्रकृतिजन्य व मानवकृत विपदाओं के पड़ने पर भी हम लोगों की सृजनात्मक शक्ति बनी रही।

व्याख्या– लेखक कहता है कि वैज्ञानिक और औद्योगिक विकास के दुष्परिणामों से अपने आप को सुरक्षित रखकर हमें उनका उपयोग किस प्रकार करना है— इस विषय पर हमें अधिक ध्यान देना पड़ेगा। लेखक आगे दो महत्वपूर्ण बातों के विषय में चिंतन करते हुए उनमें से एक के विषय में बताता है कि हमारे ऊपर प्राकृतिक व मानवकृत ढेरों विपदाएँ आईं परंतु हमारी सृजनात्मक शक्ति पर इसका कोई अधिक प्रभाव न पड़ा। हमारे देश में अनेक शासकों का राज्य रहा और उनका पतन भी हुआ। विभिन्न संप्रदाय बनते व मिटते रहे। विदेशियों ने आक्रमण करके हमें बुरी तरह रौंदा, प्रकृति ने भी हम पर कई मुसीबतें ढाईं। परंतु फिर भी हमारी संस्कृति विनष्ट नहीं हुई और हमारी सृजनात्मक शक्ति पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा। हमारे बुरे दिनों में भी हमारे देश में बहुत-से महान विद्वान व कर्मयोगी पैदा हुए जो संसार के इतिहास में अन्य युग में उच्च आसन के अधिकारी होते। जब हम गुलाम थे, हमारे देश में गाँधी जैसे कर्मनिष्ठ व धर्मात्मा क्रांतिकारी पैदा हुए, उन्हीं दिनों रवींद्रनाथ टैगोर जैसे महान कवि का जन्म हुआ, जिन्होंने अपनी ओजपूर्ण कविताओं से स्वतंत्रता प्रेमियों में उत्साह का संचार कर दिया। महर्षि अरविंद तथा रमण जैसे महान योगियों का भी जन्म हुआ, जिन्होंने जनमानस में भारतीय संस्कृति का जमकर प्रचार प्रसार किया। उसी समय अनेक महान विद्वानों व वैज्ञानिकों का भी जन्म हुआ, जिन्हें संसार में

आज भी सम्मान की दृष्टि से देखा जाता है। लेखक आगे कहता है कि जिन हालात में संसार की बहुत-सी सभ्यताएँ नष्ट हो गईं, उन्हीं हालात में भारतीय संस्कृति न कि टिकी रही बल्कि उसने आध्यात्मिक व बौद्धिक विकास भी किया। इसका मुख्य कारण हमारी सामूहिक चेतना व नैतिकता थी, जो पर्वतों से भी अधिक शक्तिशाली, सागर से भी अधिक गहरी व आकाश से भी अधिक ऊंची व विस्तृत थी। सारांशत: हमारी संस्कृति, संसार की अन्य संस्कृतियों से अधिक श्रेष्ठ है।

प्रश्नोत्तर

(अ) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।

उ०– **पाठ–** भारतीय संस्कृति **लेखक–** डॉ. राजेंद्र प्रसाद

(ब) वैज्ञानिक और औद्योगिक विकास के परिणामों को लेखक ने उद्दंड क्यों कहा है?

उ०– वैज्ञानिक और औद्योगिक विकास के परिणामों को उद्दंड कहने से लेखक का अभिप्राय है कि इनके विकास से मनुष्य को लाभ होने के साथ-साथ हानि भी होती है, जिसके भयंकर परिणाम होते हैं।

(स) गद्यांश में किन दुर्दिनों के विषय में बताया गया है?

उ०– लेखक गद्यांश में उन दुर्दिनों के विषय में बता रहा है जब हम विदेशियों से आक्रांत और पददलित हुए। प्रकृति और मानव दोनों ने हम पर मुसीबतों के पहाड़ ढहाए।

(द) हम अभी तक किन हालातों में जीवित रहे हैं?

उ०– हम अभी तक उन हालातों में जीवित रहे हैं, जिन हालातों के कारण संसार की प्रसिद्ध जातियाँ नष्ट हो गई हैं।

(य) हमारी सामूहिक चेतना किस नैतिक आधार पर टिकी हुई है?

उ०– हमारी सामूहिक चेतना पर्वतों से दृढ़, समुद्रों से भी गहरी और आकाश से भी अधिक व्यापक नैतिक आधार पर टिकी हुई है।

8. संस्कृति अथवा सामूहिक .... उनकी सफलता थी।

संदर्भ– पूर्ववत्

प्रसंग– लेखक ने भारतीय लोगों में विभिन्नता के बाद भी भारत में व्याप्त एकता को ही संस्कृति बताया है।

व्याख्या– किसी समूह की एक जैसी सोच अथवा विचारधारा ही वस्तुत: संस्कृति कहलाती है। हमारे देश की संस्कृति की यही विशेषता है कि उसमें विविधता होते हुए भी किसी एक बिंदु पर जाकर समानता अवश्य दृष्टिगोचर होती है। यही समानता अथवा एकता ही हमारे देश की जीवंतता का मूलतत्व अर्थात् प्राण है। हमारे मन-मस्तिष्क में बसी एकता की यही नैतिक भावना हमें असंख्य नगर, ग्राम, प्रदेश, संप्रदाय, जाति और वर्ग आदि में बँटा होने के बाद भी आपस में एक-दूसरे से जोड़े हुए है और उसी जुड़ाव के कारण हम सब स्वयं को एक ही जाति भारतीयता का अंग मानते हैं। एक जाति और एक भारतमाता की संतान होने के कारण हम आपस में भाई-भाई हैं। एकता का ऐसा उदाहरण विश्व में अन्यत्र कहीं नहीं दृष्टिगत होता। विभिन्न जाति, धर्म और प्रदेश में बँटा होने के कारण हमारी वेशभूषा, खानपान, रहन-सहन और भाषा में विभिन्नता दिखती ही है, फिर भी भारतीयता की भावना हमें एक बनाती है। हमारे भीतर एक-दूसरे से लगाव और अपनत्व की इस भावना का अत्यधिक महत्व है। इसके महत्व को महात्मा गाँधी ने भली-भाँति पहचाना और इसका राष्ट्र तथा जनहित में उपयोग भी किया। महात्मा गाँधी ने देश को स्वतंत्र कराने के लिए जिस क्रांति का आह्वान किया, उसका मूलाधार जनसाधारण की भावनात्मक एकता ही थी। महात्मा गाँधी ने भावनात्मक एकता के सूत्र में बँधे जनसाधारण का नेतृत्व करने के लिए बुद्धिजीवियों को तैयार किया, जिन्होंने भारतीयता के नाम पर जनसाधारण को एक हो जाने के लिए प्रेरित किया। जब जनसाधारण ने एक स्वर से स्वतंत्रता की माँग की तो विदेशी शासकों ने उसे कुचलने का प्रयास किया, जिसके प्रतिरोध के कारण क्रांति का बिगुल बज उठा और अंतत: हम स्वतंत्र हो गए।

बापू के अहिंसा, सेवा और त्याग के उपदेशों से भारतीय जनता इसलिए आंदोलित हुई क्योंकि उनका जीवन सैकड़ों वर्षों से इन्हीं आदर्शों से प्रेरित रहा था और बापू ने उनके आदर्शों को ही जाग्रत किया। सामान्य जनता के मन में धड़कती हुई इस चेतना को जाग्रत करके क्रांति का हथियार बनाने में बापू ने दूरदर्शिता का कार्य किया। जिसके कारण वे सफल हो सके।

प्रश्नोत्तर

(अ) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।

उ०– **पाठ–** भारतीय संस्कृति **लेखक–** डॉ. राजेंद्र प्रसाद

(ब) हमारे विभिन्न वर्ग और जातियाँ आपस में किस प्रकार बँधी हुई हैं?

उ०– हमारे विभिन्न वर्ग और जातियाँ सामूहिक एकता की नैतिक चेतना से बँधी हुई हैं।

(स) **बापू की सफलता का राज क्या था?**

उ०– बापू ने भारतीयों के आदर्श मूल्यों-त्याग, अहिंसा, सेवा को जाग्रत किया, जो भारतीयों में सैकड़ों वर्षों से विद्यमान थे। इन्हीं के बल पर बापू अपने प्रयासों में सफल हो सके।

(घ) वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. डॉ. राजेंद्र प्रसाद का जन्म किस राज्य में हुआ था?

(अ) उत्तर प्रदेश (ब) राजस्थान
(स) **बिहार** (द) गुजरात

2. डॉ. राजेंद्र प्रसाद ने वकालत का कार्य कब छोड़ा?

(अ) सन् 1850 में (ब) सन् 1902 में
(स) सन् 1907 में (द) **सन् 1920 में**

3. डॉ. राजेंद्र प्रसाद को 'मंगलाप्रसाद पारितोषिक' से किस रचना के लिए सम्मानित किया गया?

(अ) **मेरी आत्मकथा** (ब) भारतीय संस्कृति
(स) मेरी यूरोप यात्रा (द) जड़ और चेतन

4. निम्न में से डॉ. राजेद्र प्रसाद की कृति कौन-सी नहीं है?

(अ) मेरी यूरोप यात्रा (ब) **लाल कनेर**
(स) शिक्षा और संस्कृति (द) गाँधी जी की देन

(ङ) व्याकरण एवं रचनाबोध

1. निम्नलिखित शब्दों में से उपसर्ग व शब्द अलग कीजिए–

शब्द	**उपसर्ग**	**शब्द**
विशेष	वि	शेष
अपरिचित	अ	परिचित
अत्याचार	अति	आचार
उपार्जन	उप	अर्जन
प्रत्येक	प्रति	एक

2. निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए–

शब्द	**विलोम**
विदेशी	स्वदेशी
आसान	कठिन
अपरिचित	परिचित
निर्मल	मलिन
अनिवार्य	ऐच्छिक

3. निम्नलिखित शब्दों के तीन-तीन पर्यायवाची शब्द लिखिए–

पहाड़ - शैल, गिरि, पर्वत।
प्रचलित - प्रसिद्ध, लोकप्रिय, चलनसार।
जल - नीर, पानी, तोय।
आनंद - हर्ष, मोद, प्रसन्नता।
अनिवार्य - आवश्यक, जरूरी, अटल।

4. 'हट' तथा 'वट' प्रत्ययों का प्रयोग करते हुए दो-दो शब्द बनाइए।

उ०– **हट** - मुस्कुराहट, घबराहट।
वट - बनावट, सजावट।

(च) पाठ्येतर सक्रियता

विद्यार्थी स्वयं करें।